

संपर्क सरिता

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल की त्रैमासिक पत्रिका

संपादक-मंडल

निदेशक
प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संपादक
प्रो. पी.के. पुरोहित

सह-संपादक
श्रीमती बबली चतुर्वेदी

डिजाइन
श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी

छायांकन
श्री रितेन्द्र पवार



Deemed to be University under
Distinct Category

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक
प्रशिक्षण एवं अनुसंधान
संस्थान, भोपाल
(जनविश्विडालय, विशिष्ट श्रेणी अंतर्गत)
शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार,
थामला हिल्झ,
भोपाल 462002,
(म.प्र.) भारत

झोशल मीडिया लिंक

twitter.com/nitttrbpl

facebook.com/nitttrbhopalofficial

instagram.com/nitttrbhopal

भारतीय भाषा एवं संस्कृति केंद्र द्वारा संस्थान को राजभाषा दिगंत पुरस्कार

संस्थान की राजभाषा पत्रिका “संपर्क सरिता” को अंडमान निकोबार के मुख्य सचिव श्री केशव चंद्र द्वारा ‘राजभाषा दिगंत पुरस्कार’ तथा संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी को “राजभाषा पथ प्रदर्शक” पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार हिंदी भाषा के विकास और प्रचार में उत्कृष्टता के लिए भारतीय भाषा एवं संस्कृति केंद्र,



नई दिल्ली द्वारा दिया जाता है। उक्त पुरस्कार को संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने ग्रहण करते हुए कहा कि यह पुरस्कार हमारे लिए गर्व का क्षण है। किसी भी संस्थान की पत्रिका उस संस्थान की गतिविधियों का प्रतिबिंब होती है तथा संस्थान की छवि निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। “संपर्क सरिता” विगत 25 वर्षों से निरंतर हिंदी के प्रचार-प्रसार में संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए अग्रणी भूमिका निभाती रही है। हमारी राजभाषा पत्रिका “संपर्क सरिता” ने शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का कार्य किया है। संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार-



प्रसार की दिशा में सतत प्रयत्नशील है तथा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के दायित्व का बखूबी निर्वहन कर रहा है। संस्थान के राजभाषा समन्वयक व “संपर्क सरिता” के संपादक प्रो. पी.के. पुरोहित ने कहा कि वर्ष 1999 से प्रारंभ हुई त्रैमासिक पत्रिका “संपर्क सरिता” की सार्थक यात्रा सतत रूप से जारी है। इस पत्रिका ने एक बहुत ही लंबा 25 वर्षों का सफर पूर्ण करते हुए देशभर के विभिन्न संस्थानों के बीच लोकप्रियता हासिल की है। इस पुरस्कार से संस्थान को और अधिक प्रेरणा मिली है कि वे हिंदी में गुणवत्तापूर्ण सामग्री का प्रकाशन जारी रखें। संस्थान की यह उपलब्धि हिंदी भाषा के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है और संस्थान के समर्पण को दर्शाती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न

हिंदी सशक्त संस्कृति की धारा है: प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संस्थान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) क्र01 की वर्ष 2024 की द्वितीय अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 20 दिसंबर 2024 को आयोजित की गई, जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों ने भाग लिया। इस बैठक में विगत छः माह में की गई संस्थानों की राजभाषा गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की गई, और राजभाषा के प्रभावी और प्रगति आधारित प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। गृह मंत्रालय से उपस्थित विशिष्ट अतिथि सुश्री वर्षा वर्मा द्वारा सभी विभागों की राजभाषा गतिविधियों की समीक्षा की गयी। संस्थान के निदेशक एवं नराकास के अध्यक्ष प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज को जोड़ने का एक सशक्त उपकरण भी है। हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि एक सशक्त सांस्कृतिक धारा बन चुकी है, जो हमारे समाज को एकजुट करने का कार्य करती है। उन्होंने मध्य प्रदेश द्वारा किये गया राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की और इसे देशभर के अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श बताया। संस्थान के राजभाषा समन्वयक प्रो. पी.के.पुरोहित ने सदस्य कार्यालयों से चर्चा करते हुए कहा कि संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के लिए सभी कार्यालयों को आवश्यक प्रशिक्षण देने के लिए तैयार है। आगामी वर्ष में राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।



संस्थान पूरे वर्षभर हिंदी कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है, ताकि सभी कार्यालयों को उनके अनुसार आवश्यक प्रशिक्षण मिल सके। इस बैठक में संस्थान के अधिष्ठाता प्रशासन प्रो. आर.के दीक्षित, राजभाषा आधिकारी मेजर निशांत ओझा, निफ्ट भोपाल से निदेशक कर्नल आशीष अग्रवाल, दूरदर्शन से श्री आशीष पोटनीस, आइसर भोपाल से श्री भारत भूषण देशमुख, सहित भोपाल के 53 नराकास सदस्य कार्यालयों से 70 कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी शामिल हुए। इस बैठक ने राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने और इसके माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समृद्धि को सुदृढ़ करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने की दिशा में कार्य योजना तैयार की। कार्यक्रम का संचालन नराकास सचिव श्री संजय त्रिपाठी ने किया।



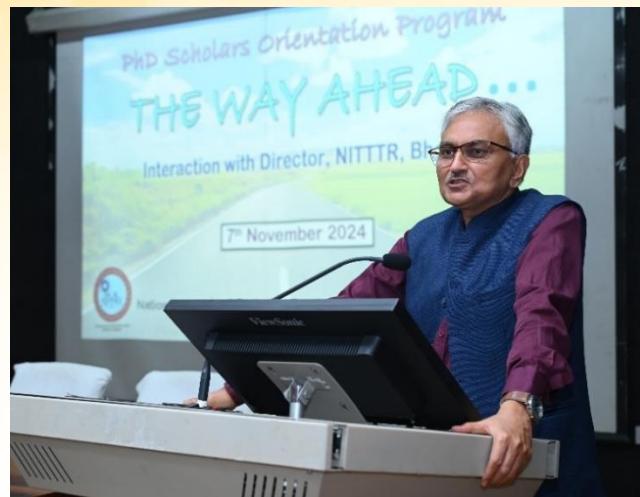
पीएच.डी विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम

नवाचार और समाज की वास्तविक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करें: प्रो. सी. सी. त्रिपाठी

समविश्वविद्यालय बनने के बाद संस्थान में प्रथम पीएच.डी बैच के विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों की शोध यात्रा की शुरुआत के रूप में आयोजित किया गया, ताकि वे अपनी नई भूमिका, अनुसंधान की प्रक्रिया और संस्थान द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं से परिचित हो सकें। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा, “आप सभी को नवाचार के साथ-साथ समाज के लिए उपयोगी अनुसंधान

पर ध्यान देना चाहिए। शोधार्थियों को नई प्रक्रियाओं और उत्पाद नवाचार से संबंधित शोध कार्य करना चाहिए। सिर्फ डिग्री पर ही नहीं अपनी क्षमता संवर्धन पर ध्यान केन्द्रित करें। हमारा संस्थान केवल ज्ञान के बारे में नहीं अपितु नए विचारों को उत्पन्न करन, वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने और समाज की उन्नति में योगदान के लिए प्रतिबद्ध है। आप सभी को हमारे संस्थान के साथ-साथ देश के प्रतिष्ठित संस्थानों एवं उद्योगों में भी शोध कार्य करने का

अवसर मिलेगा। इस यात्रा में आने वाली प्रत्येक चुनौती को एक अवसर के रूप में देखें। यह यात्रा आपकी विचारशीलता, अनुसंधान क्षमता, और समस्या सुलझाने की शक्ति को भी नया आयाम देगी।” शोधार्थियों को संस्थान के पुस्तकालय, उत्कृष्टता प्रयोगशाला और अनुसंधान केंद्र का भ्रमण कराया गया ताकि वे यहां उपलब्ध सुविधाओं का उचित उपयोग कर सकें। इस अवसर पर संस्थान के प्रो. संजय अग्रवाल, प्रो. आर. के दीक्षित, प्रो. पी. के पुरोहित, प्रो. रमेश गुप्ता बुरेला, प्रो. मनीष भार्गव एवं अन्य संकाय सदस्य उपस्थित थे। इन वरिष्ठ शैक्षिक संकाय सदस्यों ने शोधार्थियों से संवाद किया और उन्हें अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं, मार्गदर्शन और संस्थान के सहयोग की जानकारी दी।



विज्ञान में करियर बनाने की अपार संभावनाएं हैं :- प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान (आई.ई.एच.ई), भोपाल के फिजिक्स विभाग के संकाय सदस्य एवं विधार्थियों द्वारा संस्थान का शैक्षणिक भ्रमण किया गया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों ने संस्थान के विज्ञान विभाग व उत्कृष्टता केंद्र की 11 उच्च तकनीकी प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। संस्थान के निदेशक प्रो.सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि आज की स्थिति में सेमी-कंडक्टर के क्षेत्र में हमारी निर्भरता काफी हद तक विदेशी कंपनियों पर है जिससे हमारी इंडस्ट्रीज का बहुत समय सामान आयात करने में बर्बाद होता है। इसी निर्भरता को कम करने के लिए मेंके इन इंडिया के माध्यम से आने वाले समय में भारत सेमी-कंडक्टर हब बनने की दिशा में अग्रसर है। हमारे संस्थान ने आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओसेट) के लिए स्किलिंग सेंटर प्रारम्भ किया है। विज्ञान के क्षेत्र में आज कैरियर निर्माण की अपार संभावनाएं उपलब्ध हैं। विज्ञान विभाग के अधिष्ठाता प्रो. पी.के. पुरोहित ने विधार्थियों से चर्चा में कहा कि आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं कि उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान में अध्ययन कर रहे हैं। इस भ्रमण

के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न प्रयोगशालाओं और अनुसंधान केंद्रों को देखने करने का अवसर मिला, जिससे उनके व्यावाहारिक ज्ञान में वृद्धि हुई और अनुसंधान के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ी। विद्यार्थियों को प्रयोगशाला की सुविधाओं, उपकरणों और तकनीकी संसाधनों की विस्तृत जानकारी दी गई, जिससे उन्हें अध्ययन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिली। इस शैक्षणिक भ्रमण में आई.ई.एच.ई से प्रो. सुनील मिश्रा, प्रो. अमित जैन तथा संस्थान से प्रो. के.के.जैन, प्रो. हुसैन जीवाखान व प्रो.बशीरुल्लाह शेख उपस्थित थे।



संस्थान में दीपावली की पूर्व संध्या पर दीप वितरण कार्यक्रम संपन्न ज्ञान, प्रकाश और सुख-समृद्धि का प्रतीक है दीपावली: प्रो. सी.सी.त्रिपाठी

संस्थान में दिवाली की पूर्व संध्या पर एक विशेष दीप वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी.त्रिपाठी ने कर्मचारियों और सफाई-मित्रों को उपहार एवं दीप वितरित किए। प्रो. त्रिपाठी ने सभी को संबोधित करते हुए दिवाली की शुभकामनाएं दीं और कहा कि दिवाली का त्योहार केवल रोशनी का

पर्व नहीं है, बल्कि ज्ञान, प्रकाश, सुख-समृद्धि, प्रेम और एकता का प्रतीक भी है। यह कार्यक्रम दिवाली के अवसर पर संस्थान की सकारात्मकता और एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था, जिसे संस्थान के समस्त कर्मचारियों ने बहुत सराहा। इस अवसर पर प्रो. आर.के दीक्षित, प्रो. संजय अग्रवाल, प्रो. पी. के पुरोहित, प्रो. सुब्रत रॉय व श्री गौतम कुमार सिंह उपस्थित थे।



बिरसा मुंडा दिवस पर कार्यक्रम झोपड़ी-झोपड़ी एवं खोपड़ी-खोपड़ी तक में हैं बिरसा मुंडा का प्रभाव : विजय मनोहर तिवारी

संस्थान में 'बिरसा मुंडा दिवस' की पूर्व संध्या पर श्री विजय मनोहर तिवारी, पूर्व सूचना आयुक्त मध्य प्रदेश का व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि बिरसा मुंडा एक महान आदिवासी नेता और समाज सुधारक थे, जिन्होंने 25 वर्ष के अल्प जीवनकाल में अपने समुदाय के लिए अनगिनत योगदान दिए। इनमें आदिवासी शिक्षा और साक्षरता को बढ़ावा देना, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, बाल विवाह का विरोध, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी, आदिवासियों के धर्म परिवर्तन का विरोध और उनके सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं की रक्षा प्रमुख हैं। बिरसा मुंडा का जन्म 1872 में झारखण्ड के रांची जिले में हुआ तथा मृत्यु 1901 में हुई थी, लेकिन उनका योगदान आज भी आदिवासी समुदाय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आज आपसे स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानियों की सूची बनाने को कहा जाये तो शायद आप 10-15 से अधिक नाम ना लिख पाएं जबकि इस आंदोलन में लाखों लोगों ने शहादत दी हैं। आजादी के



संघर्ष में उनके जैसे महान व्यक्तित्व की भूमिका को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। उन्होंने बिरसा मुंडा से प्रभावित स्वाध्याय परिवार के योगदान पर भी प्रकाश डाला की आज उनके एक आवाहन पर लाखों लोग एकत्र हो जाते हैं। निदेशक प्रो. सी.सी.त्रिपाठी ने कहा कि कितना अद्भुत होगा उनका व्यक्तित्व की जिस उम्र में युवा ठीक से जीवन और दुनिया को समझ भी नहीं पाते उस उम्र में बिरसा मुंडा

ने देश और समाज को संगठित कर स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल कर लिया। बिरसा मुंडा के प्रेरक व्यक्तित्व एवं उनके कार्यों के बारे में जानकारी सभी को होना जरूरी है। आज की युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े उन शहीदों की भी जानकारी होना चाहिए जो शायद इतिहास के पन्नों में नहीं दिखते हैं। प्रो. पी.के पुरोहित ने कहा कि समाज को अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहिए। संस्थान के सामाजिक

उत्तरदायित्व के निर्वाहन हेतु, निदेशक द्वारा महानायक “बिरसा मुंडा” के जीवन पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाने का निर्णय लिया गया है, जिसे देश भर के संस्थानों में प्रदर्शन हेतु भेजा जायेगा। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रवि गुप्ता थे एवं संचालन श्रीमती रचना गुप्ता द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जनजातीय समाज के उत्कृष्ट अधिकारियों/कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।



संस्थान और सीपीएससी, मनीला का संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम

तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (टीवीईटी) को उभरती प्रौद्योगिकियों और उद्योग की मांगों के साथ संरेखित करने के लिए संस्थान ने कोलंबो प्लान स्टाफ कॉलेज (सीपीएससी) के सहयोग से 11 से 15 नवंबर, 2024 तक 5 दिवसीय संयुक्त अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का विषय ‘तकनीकी, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाना: भविष्य के कौशल और उभरती प्रौद्योगिकियों पर एक पहल’ था। जिसमें भूटान, भारत, मलेशिया, मंगोलिया, म्यांमार, मालदीव, पापुआ न्यू गिनी, फिलीपींस, थाईलैंड और श्रीलंका आदि 16 देशों के टीवीईटी संस्थान के अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का

उद्देश्य टीवीईटी पेशेवरों को प्रशिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम डिजाइन और कौशल वितरण को नया रूप देने के लिए आवश्यक भविष्य के कौशल और ज्ञान से परिपूर्ण करना था। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. के.के शुक्ला निदेशक, मैनिट भोपाल ने कहा कि आज सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी आवश्यक है। व्यावहारिक ज्ञान हमें उन वास्तविक स्थितियों और चुनौतियों से परिचित कराता है, जिनका सामना हम केवल किताबों और सिद्धांतों से नहीं कर सकते। आज विद्यार्थी पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित करते हैं लेकिन कई बार वे छोटे कौशल सीखने में चूक जाते हैं। कार्यक्रम के दौरान संस्थान



के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में कहा कि व्यवसायिक शिक्षा को हर स्तर पर महत्व दिया गया है। आज देश को स्किल्ड मैनपावर की आवश्यकता अधिक है। सीपीएससी मनीला के महानिदेशक, डॉ. एस.के. धमेजा, ने कहा कि दुनिया भर में शिक्षा के तरीके में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आ रहा है, शिक्षकों को अपनी कौशल और दक्षता को निरंतर बढ़ाना होगा। आज पारंपरिक शिक्षण की जगह समस्या-आधारित शिक्षण अधिक प्रासंगिक है।



प्रतिभागियों ने मध्य प्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एमपीएमआरसीएल) और ग्लोबल स्किल्स पार्क जोकि भारत का पहला बहु-कौशल पार्क है, उसका भ्रमण भी किया। कार्यक्रम के समन्वयक सीपीएससी, मनीला के डॉ. केशवन उलगानाथन एवं संस्थान से डॉ. राजेश खंबायत ने 5 दिवसीय कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अनीता लाला द्वारा किया गया।

संस्थान एवं सी.एस.आई.आर-सीरी पिलानी के बीच एम.ओ.यू पर हस्ताक्षर

संस्थान और सी.एस.आई.आर- केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी (राजस्थान) ने सेमीकंडक्टर तकनीक के क्षेत्र में सहयोग के लिए संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी व सीरी के निदेशक प्रो. पी.सी. पंचारिया ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य सेमीकंडक्टर पैकेजिंग और ऑटोसौर्सेंड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओसेट) पर संयुक्त गतिविधियाँ बढ़ाना है, जो देश में सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी के विकास को गति प्रदान करेगा। इस अवसर पर प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि इस समझौते से दोनों ही संस्थान देश के सेमीकंडक्टर मिशन को एक मजबूत आधार देंगे, जो देश की इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर उद्योग की वृद्धि में सहायक होगा। सीएसआईआर-सीरी, पिलानी का सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में गहरा अनुभव और संस्थान की ओसेट क्षेत्र में बढ़ती गतिविधियाँ इस समझौते को महत्वपूर्ण बनाती हैं। संस्थान का ओसेट के लिए कौशल केंद्र सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री से सम्बंधित

प्रशिक्षण तथा असेंबली, टेस्टिंग, मार्किंग एंड पैकेजिंग जैसी क्षमताओं के विकास का कार्य करेगा। इसके अंतर्गत दोनों संस्थाएँ संकाय सदस्यों के प्रशिक्षण, संयुक्त डिप्लोमा कार्यक्रम और पाठ्यक्रमों के संचालन पर ध्यान केंद्रित करेंगी, जिससे सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में कौशल विकास के साथ नई पीढ़ी के तकनीकी विशेषज्ञ तैयार सकें।



"टीवीईटी में नवाचार और उद्योग सहयोग पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन"

इमर्जिंग टेक्नोलॉजी के संदर्भ में टीवीईटी के विकास पर वैश्विक विचार-विमर्श

संस्थान एवं सीपीएससी मनीला द्वारा भविष्य के कौशल और उभरती प्रौद्योगिकियों के संदर्भ में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (टीवीईटी) के सशक्तीकरण पर केंद्रित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य यह था कि कैसे व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली को वर्तमान और भविष्य के कौशल की आवश्यकता के अनुसार विकसित किया जा सकता है, ताकि वैश्विक स्तर पर कुशल श्रमिकों की जरूरतों को पूरा किया जा सके। संगोष्ठी में विभिन्न देशों से प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने भाग लिया, जो वैश्विक कौशल विकास के लिए नये दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए एकत्र हुए थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. राजेश खंबायत ने वैश्विक कार्यबल में डिजिटल साक्षरता और तकनीकी कौशल की बढ़ती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए टीवीईटी प्रणालियों को सुधारने के महत्व पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भोज विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी थे। उन्होंने प्रौद्योगिकी-संचालित दुनिया में आवश्यक कौशल पर भी चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा में नवाचार हमें केवल आज के लिए ही नहीं, बल्कि भविष्य के लिए भी तैयार करता है। सीपीएससी के महानिदेशक डॉ. एस.के. धर्मेजा ने वैश्विक कौशल विकास के उभरते परिदृश्य पर चर्चा करते हुए कहा कि शैक्षिक प्रणालियों को शीघ्रता से अनुकूलित करने की आवश्यकता है। आज शिक्षा के स्तर पर तकनीकी बदलावों के बीच तालमेल बनाने की आवश्यकता है। संस्थान के निदेशक डॉ. सी. सी. त्रिपाठी ने भविष्य के लिए ग्लोबल वर्कफोर्स के निर्माण में टीवीईटी

की भूमिका के बारे में "स्मार्टरेडीनेस इंडेक्स और आईआर 4.0" पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भविष्य के लिए तैयार कार्यबल के निर्माण में टीवीईटी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा डिजिटल और तकनीकी बदलावों के दौर में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणालियों का रूपांतरण आवश्यक है। संगोष्ठी में डॉ. धीरज कुमार द्वारा "बदलते परिदृश्य में शैक्षणिक गतिविधियां" विषय पर चर्चा कर कहा कि शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों को न केवल मौजूदा, बल्कि आने वाले तकनीकी परिवर्तनों के लिए भी तैयार किया जा सके। श्री राजीव अग्रवाल द्वारा "उद्योग सहयोग एवं हितधारक जुड़ाव" पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया, जिसमें शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों के बीच सशक्त साझेदारी की आवश्यकता पर बल दिया गया। समापन उद्घोषण प्रो. संजय अग्रवाल द्वारा दिया गया।



संस्थान में भारतीय भाषा उत्सव-2024 का आयोजन

संस्थान में भारतीय भाषा उत्सव-2024 का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि प्रो सदानंद दामोदर सप्रे, मैनिट भोपाल के पूर्व प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष थे। यह आयोजन भारतीय भाषाओं के सम्मान और संवर्धन के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रकवि सुब्रमण्यम भारती की जयंती को भारतीय भाषा दिवस के रूप में घोषित किया गया है, और इसी के अंतर्गत संस्थान में भारतीय भाषा उत्सव का आयोजन किया गया। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत विशेष रूप से भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है, साथ ही आम व्यवहार में भी भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान का भाव विकसित करने पर बल दिया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान, संस्थान के विभिन्न कर्मचारियों ने अपनी मातृभाषा में प्रस्तुतियाँ दीं। यह उत्सव न केवल भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान और जागरूकता बढ़ाने का एक प्रयास था, बल्कि

यह भी दर्शाता है कि भारतीय भाषाओं का महत्व हमारी संस्कृति और शिक्षा में कितना गहरा है। इस कार्यक्रम ने भारत की भाषाई विविधता और संपन्नता को प्रदर्शित करने के साथ ही "भविष्य का भारत" और "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" के संकल्प के साथ भारतीय भाषाओं के महत्व से सभी को परिचित कराने के उद्देश्य को पूर्ण किया। इसी कार्यक्रम में स्वच्छ भारत सप्ताह के अंतर्गत संस्थान में आयोजित प्रतियोगिताओं हेतु पुरुस्कार वितरण भी किया गया, जिनका समन्वयन श्री महादेव सवादत्ती, वरिष्ठ पुस्तकालय अध्यक्ष द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के साथ संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि श्रीमती वंदना त्रिपाठी, कार्यक्रम समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता तथा संस्थान के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित थे।



नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क पर राष्ट्रीय परिचर्चा

स्किल को इंडस्ट्री के साथ मैप करें जिससे रोजगार के अवसर बढ़ें: श्री रघुराज माधव राजेंद्रन

संस्थान में नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क के अंतर्गत उद्योगों और संस्थानों में कौशल-आधारित कार्यक्रमों और एक वर्ष तक कार्यरत अप्रेंटिस ट्रेनिंग के मूल्यांकन पर राष्ट्रीय परिचर्चा एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री रघुराज माधव राजेंद्रन, सचिव, तकनीकी शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश ने कहा, "स्किल को उद्योग की आवश्यकताओं के साथ मिलाकर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।" उन्होंने नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा कि ये पहलें युवाओं को कार्यस्थल के लिए तैयार कर, उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार कुशल बनाएंगी। विशेष अतिथि, श्री गोविंद जायसवाल, संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने पीएम इंटर्नशिप के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि यह युवाओं को महत्वपूर्ण अनुभव प्रदान करेगा, जो उनके पेशेवर विकास में सहायक साबित होगा। उन्होंने यह भी बताया कि जैसे-जैसे भारत की अर्थव्यवस्था और उद्योग क्षेत्र विकसित हो रहे हैं, वैसे-वैसे कौशल आधारित शिक्षा की अहमियत भी बढ़ रही है। निटर भोपाल इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संस्थान निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने कहा कि यह पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है जिसने कौशल विकास को नया आयाम

दिया है। इसके अनुपालन से शिक्षा और उद्योग जगत में बड़ा परिवर्तन होने वाला है। यह कार्यशाला कौशल विकास और अप्रेंटिस ट्रेनिंग के महत्व को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी, जो युवा को रोजगार के लिए और अधिक सक्षम बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है। कार्यशाला में प्रो. बी. एल. गुप्ता ने अप्रेंटिस ट्रेनिंग के मूल्यांकन और क्रेडिट प्रदान करने की पेपरलेस प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर संस्थान के प्रथम बैच के अप्रेंटिस ट्रेनिंग अभ्यर्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। संस्थान द्वारा उभरते क्षेत्रों में विकसित 10 नए मूक्स कार्यक्रमों का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम को कोलकाता, चेन्नई, मुंबई और कानपुर के बोर्ड ऑफ अप्रेंटिसशिप के निदेशकों ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर देश के अन्य एनआईटीटीआर चेन्नई, कोलकाता और चंडीगढ़ सहित कई उद्योग, शिक्षा और कौशल विकास से जुड़े संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भी कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के समन्वयक, प्रो. संजय अग्रवाल ने इस महत्वपूर्ण आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, जबकि कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजना तिवारी ने किया गया।



निदेशक की छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष से भेट

संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी.त्रिपाठी ने छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री एवं तकनीकी शिक्षामंत्री श्री विजय शर्मा से मुलाकात की। इस भेट में निटर भोपाल के विस्तार केंद्र रायपुर, में उभरते और भविष्य के प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार और कौशल पार्क की स्थापना पर विस्तृत चर्चा के साथ विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की कॉपी प्रस्तुत की। इस केंद्र पर ड्रोन प्रौद्योगिकी पर अत्यकालिक पाठ्यक्रम, प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव दिया गया है जिसपर श्री शर्मा ने अपना सहयोग व्यक्त



किया। निदेशक प्रो. सी.सी.त्रिपाठी ने डॉ. रमन सिंह, विधानसभा अध्यक्ष रायपुर, छत्तीसगढ़ से भी मुलाकात की एवं नया रायपुर के ग्राम बेन्द्री में 04 हेक्टेयर भूमि संस्थान के विस्तार केंद्र रायपुर की स्थापना हेतु आवंटित करने के लिए आभार व्यक्त किया। यह पहल तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ उभरती तकनीकों में क्षेत्रीय विकास में अहम योगदान देने वाली है। इस अवसर पर प्रो. पराग दुबे एवं श्री राजेश दीक्षित उपस्थित थे।



“सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों” पर तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य समाज और समुदाय के लिए एक सकारात्मक योगदान सुनिश्चित करते हैं : प्रो. त्रिपाठी

संस्थान में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों (यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज) विषय पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 75 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसका उद्देश्य तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण में मूल्य-आधारित शिक्षा को एकीकृत करना था। कार्यक्रम में निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर कार्यशाला प्रतिभागियों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक नैतिकता में संतुलन बनाने में मदद करती है, जो एक मजबूत और सतत समुदाय के निर्माण में सहायक है। भारत एक ऐसा देश है जो अपने मानवीय मूल्यों और संस्कृति के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है, और इस प्रकार के कार्यक्रम देश की सांस्कृतिक धरोहर को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एच. डी. चारण ने कहा कि एक ऐसा समाज जो सार्वभौमिक मानव मूल्यों पर आधारित हो, वह हमेशा चुनौतियों का नवीन और सामंजस्यपूर्ण समाधान ढूँढ सकता है। “सार्वभौमिक मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा का व्यक्ति, संगठन और समाज पर गहरा प्रभाव



पड़ता है। डॉ. कुमार सम्भव और श्री दिलशाद हुसैन ने कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिए और आत्म, परिवार और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में मानवीय मूल्य के व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम के सत्रों में आत्मा की भूमिका और इसके महत्व पर भी गहन चर्चा की गई, जिससे प्रतिभागियों को आत्म-चिंतन, सहानुभूति, टीमवर्क और प्रभावी संचार जैसे महत्वपूर्ण कौशल प्राप्त करने में मदद मिली। कार्यक्रम का



समन्वय डॉ. रोती प्रधान द्वारा किया गया, जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सभी प्रतिभागियों को एक सहज और समृद्ध शिक्षण अनुभव प्राप्त हो। यह पहल संस्थान की इस प्रतिबद्धता को दर्शाती है कि वह समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए उन उपकरणों से व्यक्तियों और संगठनों को सशक्त बना रहा है, जो मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे, जिन्होंने कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों का लाभ उठाया।

गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय के प्रतिनिधियों का संस्थान में भ्रमण

रक्षा मंत्रालय के गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए) की भोपाल इकाई के गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी कमांडर कुलदीप एस. नेहरा ने परस्पर सहयोग के लिए संस्थान भ्रमण कर निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी से विस्तृत चर्चा की। इस परिचर्चा का उद्देश्य दोनों संस्थाओं के बीच संभावित सहयोग और रक्षा क्षेत्र में प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग के नए अवसरों पर विचार करना था। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि हमारा संस्थान मानव संसाधन को प्रशिक्षण देने के लिए समर्पित है। हम रक्षा क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए सेवाकालीन शिक्षा, पूर्व शिक्षा और अनुभव की मान्यता, और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के निर्माण में पूरी तरह सक्षम हैं। संस्थान रक्षा मंत्रालय के साथ किसी भी रूप में कार्य करने पर गर्व महसूस करेगा और इस सहयोग से कई नई संभावनाओं के द्वारा खुल सकते हैं। कमांडर कुलदीप एस नेहरा ने संस्थान की उत्कृष्टता केंद्र की इंडस्ट्री 4.0 प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। उन्होंने संस्थान की अत्यधिक तकनीकी प्रगति की सराहना करते हुए कहा कि निटर भोपाल डिफेंस के विभिन्न संस्थानों के साथ मिलकर कार्य कर सकता है और रक्षा क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण प्रदान करने में अहम भूमिका निभा सकता है। निटर भोपाल की उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी

सुविधाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम रक्षा क्षेत्र की आधुनिक जरूरतों को पूरा करने में सहायक हो सकती हैं। संस्थान और रक्षा मंत्रालय के बीच एक संभावित समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यु) पर भी चर्चा हुई, जो दोनों संस्थाओं के बीच भविष्य में होने वाली परियोजनाओं और सहयोग की संभावनाओं को मजबूत करेगा। इस सहयोग से न केवल संस्थान की अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाओं का लाभ रक्षा क्षेत्र को मिलेगा, बल्कि इससे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी, जो रक्षा कर्मचारियों को नई प्रौद्योगिकियों से परिचित कराने में सहायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर संस्थान के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. मनीष भार्गव व मेजर निशांत ओझा भी उपस्थित थे।



संस्थान में निःशुल्क आयुर्वेदिक एवं नेत्र जांच शिविर का आयोजन

संस्थान में निःशुल्क आयुर्वेदिक तथा नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर संस्थान ने कायनात हूमन डेवलपमेंट सोसाइटी और लायंस क्लब साउथ के सौजन्य से आयोजित किया। इस कार्यक्रम में संस्थान निदेशक प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी, श्रीमती वंदना त्रिपाठी, डॉ. एन. बनर्जी, प्रो. संजय अग्रवाल, प्रो. बी. एल. गुप्ता, प्रो. एस. एस. केदार एवं कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता तथा वरिष्ठ समाजसेवी और राष्ट्रीय अध्यक्ष शेख फैयाज उपस्थित थे।



शिविर में पंडित खुशी लाल आयुर्वेदिक चिकित्सालय के डॉक्टरों द्वारा सामान्य जांच कर दवाइयां वितरित की गयी। कायनात हूमन डेवलपमेंट सोसाइटी और प्रकाश नेत्रालय के डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच की गयी। शिविर का मुख्य उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना था, जिसमें 95 लोगों को लाभ हुआ। इस कार्यक्रम ने स्थानीय समुदाय के बीच स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को आसान बनाने में मदद की।

कौशल विकास मंत्रालय की बैठक में संस्थान की सहभागिता

कौशल विकास मंत्रालय, मध्य प्रदेश द्वारा “कौशल विकास-समग्र विकास” विषय पर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता श्री रघुराज राजेंद्र (आई.ए.एस), सचिव, कौशल विकास मंत्रालय ने की। इस बैठक में कौशल विकास विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए। संस्थान से निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी व अधिष्ठाता प्रो. पी.के पुरोहित ने इस बैठक में सहभागिता की। इस बैठक का उद्देश्य कौशल विकास के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करना और समग्र विकास के लिए आवश्यक पहल की रूपरेखा तैयार करना था। इस दौरान, कौशल विकास मंत्रालय और अन्य संबंधित संस्थाओं के अधिकारियों ने इस क्षेत्र में हो रहे कार्यों की समीक्षा की और आने वाले समय में कौशल विकास को बेहतर

और अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रस्तावित दृष्टिकोण पर चर्चा की। प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने इस बैठक में अपने विचार साझा किए और संस्थान की भूमिका पर प्रकाश डाला, जो तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने कौशल विकास के प्रभावी कार्यक्रमों के निर्माण और उनके कार्यान्वयन के महत्व को रेखांकित किया, जो न केवल राष्ट्रीय विकास में सहायक होंगे, बल्कि युवाओं को रोजगार और स्वावलंबन की दिशा में भी प्रेरित करेंगे। यह बैठक कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल थी, जो न केवल सरकार के प्रयासों को गति देती है, बल्कि शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवाचारों को भी प्रोत्साहित करती है।



सर्वकाता जागरूकता सप्ताह 2024 आयोजित

संस्थान में सर्वकाता जागरूकता सप्ताह 2024 मनाया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना था। सर्वकाता जागरूकता मुख्यालय द्वारा इस वर्ष की थीम "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" थी, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों को भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूक करना और उन्हें इस दिशा में ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित करना था। सर्वकाता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत संस्थान में कई कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सर्वकाता जागरूकता सप्ताह की शुरुआत 28 अक्टूबर 2024 को राजीव गांधी सभागार में सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा समारोह से हुई। इस आयोजन में सभी उपस्थित लोगों ने नैतिक आचरण और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों के प्रति अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता व्यक्त की। इसी सन्दर्भ में 21 नवंबर 2024 को संस्थान में

श्री गौतम कुमार सिंह, प्रशासनिक अधिकारी ने "आचरण नियम" पर व्याख्यान दिया। इस सत्र का उद्देश्य सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को आचरण के नियमों की समझ और पालन के प्रति जागरूक करना था, ताकि वे अपने दायित्वों को ईमानदारी और निष्पक्षता से निभा सकें।



सर्वकाता जागरूकता सप्ताह का समापन 28 नवंबर 2024 को हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि श्री रवींद्र कान्हेरे, अध्यक्ष, प्रवेश और शुल्क विनियमन समिति थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि यदि हम अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को अपनाते हैं, तो यह न केवल हमारे देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में योगदान करेगा, बल्कि यह समग्र रूप से एक सशक्त और प्रगतिशील समाज की नींव रखेगा। इस अवसर पर

संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने अपने संबोधन में सभी को अपने आचरण में ईमानदारी बनाए रखने की प्रेरणा दी। समापन सत्र में मुख्य अतिथि व निदेशक महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गये। सर्वकाता जागरूकता सप्ताह 2024 के समन्वयक डॉ. अजय कुमार जैन थे व आयोजन समिति में प्रो. एम. सी. पालीवाल, श्रीमती नीतू अग्रवाल और श्रीमती बबली चतुर्वेदी ने सक्रिय रूप से योगदान किया।

सप्ताह के दौरान विभिन्न जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनका विवरण निम्नानुसार है:

क्र.	दिनांक	प्रतियोगिता	निर्णायक	समन्वयक	परिणाम	सांत्वना पुरस्कार
1	16/10/2024	पोस्टर प्रतियोगिता	प्रो. एस.एस केदार	श्रीमती नीतू अग्रवाल श्रीमती बबली चतुर्वेदी	1. श्री रितेन्द्र पवार 2. श्री शिवम खरे 3. डॉ. वंदना सोमकुंवर	
2	18/10/2024	स्लोगन प्रतियोगिता	प्रो. एस.एस केदार	श्रीमती नीतू अग्रवाल श्रीमती बबली चतुर्वेदी	1. श्रीमती गुंजन शर्मा 2. श्रीमती आरती वर्मा 3. श्री निलेश पुनकर	1. श्री शिवराम बागरी 2. श्री प्रकाश 3. श्री सुनील सक्सैना 4. श्री पंकज प्रजापति 5. श्रीमती कविता धोटे 6. श्री प्रमोद शर्मा 7. श्री धीरज पांडे 8. श्री जगदीश चौधरी 9. श्री सुधीर त्रिपाठी 10. श्री राजू थोराट
3	21/10/2024	निबंध प्रतियोगिता	श्रीमती वंदना त्रिपाठी	श्रीमती नीतू अग्रवाल श्रीमती बबली चतुर्वेदी	1. श्रीमती दिव्या विजय 2. श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी 3. डॉ. सीमा वर्मा	
4	20/11/2024	प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	मेजर निशांत ओझा	प्रो. एम.सी पालीवाल श्री आशीष चट्कवार श्री एच. एस. राव श्रीमती नीतू अग्रवाल श्रीमती बबली चतुर्वेदी	1. श्रीमती दिव्या विजय 2. श्री पुष्णेन्द्र सिंह तोमर 3. श्री सुनील शिवनानी 3. श्री रावेन्द्र शुक्ल	



अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग

लेजर के इंजीनियरिंग अनुप्रयोग पर कार्यक्रम

संस्थान में अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 21 से 25 अक्टूबर 2024 तक “लेजर के इंजीनियरिंग अनुप्रयोग” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में लेजर के विभिन्न इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों और उनके उपयोग पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, प्रतिभागियों को लेजर के आधारभूत सिद्धांतों और उनके विभिन्न इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों से अवगत कराना था। प्रशिक्षण में लेजर के कार्य करने के तरीकों, विभिन्न प्रकार के लेजर और उनके अनुप्रयोगों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को लेजर तकनीक के विभिन्न क्षेत्रों

में उपयोग के बारे में जानकारी दी गई, जिनमें संचार, चिकित्सा, शोध, और मटेरियल प्रेसेसिंग प्रमुख थे। इन सभी क्षेत्रों में लेजर की भूमिका और प्रभाव को समझाया गया, जिससे प्रतिभागियों को यह समझने का अवसर मिला कि लेजर तकनीक कैसे इन विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेषज्ञ के रूप में, डॉ. रोहन सिंह (सहायक प्रोफेसर, आईआईएसईआर भोपाल) ने लेजर तकनीक के उन्नत अनुप्रयोग और भविष्य की संभावनाओं पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. पी.के. पुरोहित ने योगदान दिया।

परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन पर कार्यक्रम

संस्थान में अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 25 से 29 नवंबर 2024 तक “परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बिहार राज्य के इंजीनियरिंग शिक्षकों को परिणाम-आधारित शिक्षा के सिद्धांतों, पाठ्यक्रम कार्यान्वयन, और मूल्यांकन पद्धतियों से अवगत कराना था। पाठ्यक्रम कार्यान्वयन में प्रभावी होने के लिए यह आवश्यक है कि परिणामों, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन के बीच संतुलन हो। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए

डिजाइन किया गया है, ताकि बिहार राज्य तकनीकी शिक्षा (एसबीटीई) के पाठ्यक्रम और मूल्यांकन से संबंधित पहलुओं को सही तरीके से लागू किया जा सके। इसमें शिक्षकों, नीति निर्माताओं, प्रशासकों, परीक्षकों और मूल्यांकनकर्ताओं को एक साथ मिलकर पाठ्यक्रम को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए नवीनतम परिवर्तनों से अवगत कराना अत्यंत आवश्यक है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरुल्ला शेख व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. ए. रिज्वी व डॉ. सुब्रत रॉय ने योगदान दिया।



कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग

शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण पद्धति पर कार्यक्रम

संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 02 दिसंबर से 06 दिसंबर 2024 तक ‘शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण पद्धति’ विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान से 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आधुनिक आर्थिक वैश्वीकरण, उद्योग 4.0 और डिजिटलीकरण के युग में, आज के शिक्षकों के लिए कई नई चुनौतियाँ और समस्याएँ उभर रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में विद्यार्थियों के परिणामों को सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है, और यह शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों की भूमिका को भी महत्वपूर्ण बनाता है। शिक्षक की गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है शिक्षक का शैक्षिक ज्ञान, जिसे हम पेडागॉजिकल नॉलेज (शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान)।



कहते हैं। पेडागॉजिकल नॉलेज एक विशेष प्रकार का कौशल है, जिसे शिक्षक अपनी शिक्षा और अनुभव से विकसित करते हैं ताकि वह विद्यार्थियों को प्रभावी रूप से शिक्षा प्रदान कर सकें। जीवनभर सीखने का सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह शिक्षकों को अपने शैक्षिक दृष्टिकोण को निरंतर विकसित करने और बदलते हुए शैक्षिक परिवेश के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम बनाता है। यह कार्यक्रम शिक्षार्थी-केन्द्रित शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देगा, जो आज के समय की आवश्यकताओं के अनुरूप है। इस पद्धति में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं के आधार पर शिक्षा दी जाती है, जिससे उन्हें अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ए. ए. रिजवी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।



इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग

परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन पर कार्यशाला

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 25 से 29 नवंबर 2024 राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड, पटना में परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन (प्रश्न पत्र और प्रयोगशाला मैनुअल विकास) विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड, पटना के 109 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य परिणाम-



आधारित पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए प्रश्न पत्र और प्रयोगशाला मैनुअल के विकास से संबंधित पहलुओं पर आवश्यक जानकारी और कौशल प्रदान करना था। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को इस बात से अवगत कराया गया कि परिणाम आधारित पाठ्यक्रमों को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए और विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए प्रश्न पत्र एवं प्रयोगशाला मैनुअल तैयार करने की प्रक्रिया कैसे की जाती है। कार्यशाला में यह भी चर्चा की गई कि पाठ्यक्रम की नियमित समीक्षा और प्रतिक्रिया कैसे विद्यार्थियों के प्रदर्शन और सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायक हो सकती है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ए. एस. वाल्के व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. ए. के. सराठे ने योगदान दिया।

संस्थान और सुची सेमिकॉन के मध्य एम.ओ.यू पर हस्ताक्षर

सूरत में स्थित सुची सेमिकॉन ने एक ऐतिहासिक कदम बढ़ाते हुए अपने सेमीकंडक्टर प्लांट का उद्घाटन किया। इस उद्घाटन समारोह में संस्थान से प्रो. सीमा वर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। इस अवसर पर उन्होंने सुची सेमिकॉन के अत्याधुनिक क्लीन रूम फैसिलिटी का दौरा किया और सेमीकंडक्टर निर्माण की प्रौद्योगिकियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर सुची सेमिकॉन और संस्थान के मध्य एक समझौता ज्ञापन भी हुआ। इस समझौते के अंतर्गत, दोनों संस्थाएं भविष्य में एक-दूसरे के साथ मिलकर शोध, प्रशिक्षण और विकास के क्षेत्रों में सहयोग करेंगी। यह साझेदारी सेमीकंडक्टर तकनीक में अनुसंधान और प्रशिक्षण को नई दिशा देने में सहायक होगी। सुची सेमिकॉन को इस नए सेमीकंडक्टर उद्योग की शुरुआत से भारत में सेमीकंडक्टर क्षेत्र को नई ऊर्जा मिलेगी। कंपनी ने



अगले तीन वर्षों में इस परियोजना में 840 करोड़ रुपये का निवेश करने का लक्ष्य रखा है। इस निवेश से न केवल गुजरात राज्य में आर्थिक विकास होगा, बल्कि यह देश में सेमीकंडक्टर उद्योग को भी सशक्त बनाएगा।

इंडक्शन फेज-II कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 14 से 25 अक्टूबर 2024 तक इंडक्शन फेज-II के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य और विषयों में शिक्षण के क्षेत्र में टेक्नोलॉजी का उपयोग और उच्च शिक्षा में नवाचार से संबंधित प्रशिक्षण पर गहन ध्यान केंद्रित करना था। इस कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षकों को न केवल शैक्षिक सिद्धांतों से अवगत कराया, बल्कि उनके तकनीकी कौशल को भी बढ़ाने में मदद की, जिससे वे आगामी

समय में और अधिक कुशल और प्रभावी शिक्षक बन सकें। कार्यक्रम में आधुनिक तकनीकों, जैसे ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म्स, ई-लर्निंग टूल्स और डिजिटल संसाधनों के उपयोग से शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने और विद्यार्थियों को प्रभावी तरीके से ज्ञान प्रदान करने की जानकारी के साथ ही उच्च शिक्षा में नवाचार विषयों और पद्धतियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजली पोतनीस व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आर. के. दीक्षित, डॉ. ए. के. जैन व डॉ. बशीरुल्लाह शेख ने योगदान दिया।



आपूर्ति श्रृंखला में नवाचार पर ऑनलाइन कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 04 से 08 नवंबर 2024 तक “आपूर्ति श्रृंखला में नवाचार” विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य आपूर्ति श्रृंखला के प्रबंधन में नवाचार के महत्व को समझाना और प्रशिक्षुओं को इस क्षेत्र में नई तकनीकों और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना था। कार्यक्रम के दौरान, आपूर्ति श्रृंखला के विभिन्न चरणों जैसे उत्पादन, भंडारण, वितरण और लॉजिस्टिक्स में

नवाचार लाने के तरीकों पर विस्तृत विचार किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को विशेष असाइनमेंट्स और प्रोजेक्ट्स के माध्यम से विषय को समझने का अवसर प्रदान किया गया। इन असाइनमेंट्स के माध्यम से प्रतिभागियों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों पर आधारित समस्याओं का समाधान ढूँढने की चुनौती दी गई, जिससे उन्हें आपूर्ति श्रृंखला के नवाचारों को व्यावहारिक रूप से समझने में मदद मिली। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजली पोतनीस थी।

इमेज प्रोसेसिंग यूजिंग मेटलैब पर कार्यशाला

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 09 से 12 दिसंबर 2024 तक “इमेज प्रोसेसिंग यूजिंग मेटलैब” विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में मेटलैब का उपयोग करके इमेज प्रोसेसिंग पर गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे प्रतिभागियों को मेटलैब सॉफ्टवेयर का उपयोग करके इमेज प्रोसेसिंग के बेसिक और एडवांस एल्गोरिदम पर कार्य करने का अवसर मिला। कार्यक्रम का उद्देश्य इमेज प्रोसेसिंग के सिद्धांतों और

तकनीकों को समझाना और मेटलैब सॉफ्टवेयर के माध्यम से इन तकनीकों को व्यावहारिक रूप से लागू करने का तरीका सिखाना था। इसमें विभिन्न इमेज प्रोसेसिंग एल्गोरिदम जैसे कि फिल्टरिंग, एज डिटेक्शन, कंट्रास्ट एन्हांसमेंट, और इमेज रिकॉम्प्रिजन पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजली पोतनीस थी।



प्रौद्योगिकी एकीकरण से संकाय सशक्तिकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण पर कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 02 दिसंबर से 06 दिसंबर 2024 तक ‘प्रौद्योगिकी एकीकरण से संकाय सशक्तिकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण’ विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान से प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण पद्धतियों और गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी के प्रभावी एकीकरण के बारे में जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान करना था। इस कार्यक्रम में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, तकनीकी शिक्षकों की भूमिका, आईसीटी उपकरणों, ओईआर, और सीओ-पीओ-ओबीई से संबंधित महत्वपूर्ण सत्रों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को नवीनतम शिक्षण पद्धतियों को तकनीकी उपकरणों के साथ एकीकृत करके गुणवत्ता और नवाचार को बढ़ावा देने के तरीकों को भी बताया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सीमा वर्मा थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे.पी. टेगर ने योगदान दिया।



इंडक्शन फेज-I कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग द्वारा दिनांक 09 से 20 दिसंबर 2024 तक इंडक्शन फेज-I के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस दो सप्ताह के प्रेरक कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी शिक्षकों को उन्नत शिक्षण पद्धतियों से लैस करना और उनके अभ्यासों को समकालीन शैक्षिक मानकों, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ संरचित करना था। प्रथम सप्ताह में प्रतिभागियों को ब्लूम टैक्सोनॉमी, डेव और क्रैथवोहल के सिद्धांतों, और परिणाम-आधारित

शिक्षा से परिचित कराया गया। कक्षा संचार, मिश्रित शिक्षण और आईसीटी स्टडी द्वारा समृद्ध किया गया। द्वितीय सप्ताह में प्रतिभागियों ने शैक्षिक मीडिया, अनुदेशात्मक डिजाइन सिद्धांत और मूल्यांकन उपकरण जैसे रूब्रिक्स पर सत्रों में भाग लिया। इसके अतिरिक्त, सत्र नियोजन, उच्च-क्रम सोच प्रश्न तैयार करना, और मूल्यांकन रूब्रिक्स डिजाइन करना जैसी गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सीमा वर्मा व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. एस. गणपति, डॉ. जे.पी. टेगर व डॉ. सचिन तिवारी ने योगदान दिया।



प्रबंधन शिक्षा विभाग

व्यावसायिक शिक्षक उत्कृष्टता हेतु प्रबंधन कौशल पर कार्यक्रम

संस्थान के प्रबंधन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 04 से 08 अक्टूबर 2024 तक “व्यावसायिक शिक्षक उत्कृष्टता हेतु प्रबंधन कौशल” विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा में शिक्षकों की उत्कृष्टता को बढ़ावा देना और उन्हें प्रबंधन कौशल में प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम के दौरान, संस्थान के प्रबंधन शिक्षा विभाग द्वारा विविध शैक्षिक विधियों का उपयोग किया गया, ताकि प्रतिभागी न केवल प्रबंधन के सिद्धांतों को समझें, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन में कैसे लागू किया जा सकता है, यह भी सीखा जा सके। इस कार्यक्रम

की प्रमुख विशेषता थी इसका व्यावहारिक और संवादात्मक दृष्टिकोण। कार्यक्रम में प्रस्तुतीकरण, समूह चर्चा, अनुभवों का आदान-प्रदान, केस विधि और स्वयं मूल्यांकन पद्धतियों का व्यापक उपयोग किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने न केवल शैक्षिक संस्थानों में व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए प्रबंधन कौशल विकसित करने का अवसर प्रदान किया, बल्कि उनके व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. रोली प्रधान व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सीमा वर्मा ने योगदान दिया।

इंडक्शन फेज-1 कार्यक्रम

संस्थान के प्रबंधन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 25 नवंबर से 06 दिसंबर 2024 तक इंडक्शन फेज-1 के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इंडक्शन फेज-1 कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नए शिक्षकों को संस्थान की कार्यप्रणाली, शैक्षिक दृष्टिकोण और व्यावसायिक जीवन की चुनौतियों से परिचित कराना था। इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को उनके शैक्षिक और पेशेवर जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक मूलभूत कौशल और दृष्टिकोण से अवगत कराया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न

कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया गया, जिनमें प्रतिभागियों को उनके क्षेत्रों में नवीनतम प्रौद्योगिकी और प्रबंधन दृष्टिकोण से परिचित कराया गया। इन कार्यशालाओं ने उन्हें व्यावसायिक जीवन में सफलता के लिए आवश्यक विभिन्न तकनीकी और गैर-तकनीकी कौशल को सिखाया। प्रतिभागियों को उद्योग की वर्तमान स्थिति, भविष्य की संभावनाओं और पेशेवर जीवन में आने वाली चुनौतियों के बारे में भी जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. रोली प्रधान व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रमेश गुप्ता बुरेला, डॉ. सुब्रत राय एवं डॉ. संजय अग्रवाल ने योगदान दिया।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन एवं सिक्स सिग्मा पर कार्यक्रम

संस्थान के प्रबंधन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 02 दिसंबर से 06 दिसंबर 2024 तक “संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन एवं सिक्स सिग्मा” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, प्रतिभागियों को संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (टीक्यूएम) और सिक्स सिग्मा के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना था। इन दोनों तकनीकों का उपयोग कंपनियों में गुणवत्ता को सुनिश्चित करने और कार्यप्रणाली में सुधार लाने के लिए किया जाता है। कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान किया गया, बल्कि

उन्हें इन सिद्धांतों को व्यवहार में लागू करने की भी जानकारी दी गई। टीक्यूएम एक प्रबंधन दृष्टिकोण है जो उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है। सिक्स सिग्मा एक डेटा-ड्रिवन विधि है, जिसका उद्देश्य दोषों को कम करना और प्रक्रियाओं की गुणवत्ता को बढ़ाना है। कार्यक्रम में सिक्स सिग्मा और टीक्यूएम से संबंधित विभिन्न उपकरणों और विधियों पर चर्चा की गई, जिससे उन्हें इन सिद्धांतों को बेहतर तरीके से समझने का अवसर मिला। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बी.एल. गुप्ता व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आर.बी. शिवगुंडे ने योगदान दिया।

मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग

3डी प्रिंटिंग, कम्पोजिट सामग्री एंड स्मार्ट सामग्री पर कार्यशाला

संस्थान के मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 21 से 25 अक्टूबर 2024 तक “3डी प्रिंटिंग, कम्पोजिट सामग्री एंड स्मार्ट सामग्री” विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य आधुनिक तकनीकों और सामग्रियों के क्षेत्र में ज्ञानवर्धन करना था। इस दौरान प्रशिक्षुओं को 3डी प्रिंटिंग के विभिन्न पहलुओं, कम्पोजिट और स्मार्ट सामग्रियों के उपयोग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। 3डी प्रिंटिंग के लिए उपयोग होने वाली विभिन्न सामग्रियों जैसे प्लास्टिक, धातु, सिरेमिक और पोलिमर के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही, यह भी बताया गया कि विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का चयन करते समय किन-किन पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए। 3डी प्रिंटिंग के लिए उपयुक्त डिजाइन बनाने की विधियों और तकनीकों के साथ ही 3डी प्रिंटिंग के लिए डिजाइनिंग करते समय किन तकनीकी और संरचनात्मक

पहलुओं का ध्यान रखना आवश्यक है इस पर भी चर्चा की गयी। कार्यक्रम के दौरान सीएसआईआर-एमप्री, भोपाल के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अभिषेक पांडे और प्रधान वैज्ञानिक डॉ. गौरव कुमार गुप्ता ने "3डी प्रिंटिंग में प्रगति: सामग्री और निर्माण में क्रांतिकारी बदलाव" तथा "स्मार्ट सामग्री और उनके अनुप्रयोग" विषयों पर विस्तार से जानकारी प्रदान की। डॉ. अभिषेक पांडे एवं डॉ. गौरव कुमार गुप्ता द्वारा प्रतिभागियों को सी.एस.आई.आर - एमप्री के लाइट मेटल फेब्रिकेशन यूनिट, पाउडर मेटलर्जी लेब एवं 3डी प्रिंटिंग लेबस का भ्रमण कराया गया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों को यह बताया गया कि किस प्रकार सीएसआईआर संस्थान में स्मार्ट मैटेरियल्स और थिन फिल्म पर शोध कार्य हो रहा है और इसके भविष्य में संभावित अनुप्रयोग क्या है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एल.एस. राजू व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. निशीथ दुबे ने योगदान दिया।



तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग

नवीनतम प्रौद्योगिकी से सौर ऊर्जा उत्पादन एवं प्रबंधन पर कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 09 से 13 दिसंबर 2024 तक ‘नवीनतम प्रौद्योगिकी से सौर ऊर्जा उत्पादन एवं प्रबंधन’ विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज की आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में, बिजली उत्पादन एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया है। ग्लोबल वार्मिंग, जीवाश्म ईंधन के तेजी से घटते भंडार और पर्यावरणीय प्रदूषण के बढ़ते प्रभावों के कारण, ऊर्जा के वैकल्पिक और नवीकरणीय स्रोतों की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सौर ऊर्जा, जो एक स्वच्छ, नवीकरणीय और अनंत स्रोत है, इन मुद्दों का समाधान पेश करता है। सौर ऊर्जा उत्पादन की अवधारणाओं और उनके विभिन्न अनुप्रयोगों को समझना महत्वपूर्ण हो गया है, ताकि हम भविष्य में ऊर्जा संकट से निपट सकें और

पर्यावरणीय क्षति को कम कर सकें। इस संदर्भ में, सौर ऊर्जा उत्पादन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई) तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में, सौर ऊर्जा उत्पादन में ए.आई तकनीकों के विभिन्न अनुप्रयोगों और उनके लाभों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इन तकनीकी पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान करना था, ताकि प्रतिभागियों को सौर ऊर्जा के उत्पादन और प्रबंधन में नवीनतम प्रौद्योगिकियों का गहरा ज्ञान मिल सके। इसके माध्यम से, प्रतिभागियों को सौर ऊर्जा क्षेत्र में व्यावसायिक दक्षता और अनुसंधान कार्यों में सुधार लाने के लिए आवश्यक उपकरण और ज्ञान प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सचिन तिवारी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. पल्लवी भट्टनागर ने योगदान दिया।

इंडक्शन फेज-1 कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 02 से 13 दिसंबर 2024 तक इंडक्शन फेज-1 के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 34 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा प्रणाली में सुधार और नवीनतम शैक्षिक पद्धतियों को समझने के लिए प्रशिक्षकों को तैयार करना था। कार्यक्रम में तकनीकी शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव, पाठ्यक्रम परिणाम निर्माण, कोर्स आर्टिक्यूलेशन मैट्रिक्स तैयार करने, कक्षा संचार और प्रस्तुति कौशल के साथ-साथ परिणाम-आधारित शिक्षण-सीखने के दृष्टिकोण, मिश्रित शिक्षा और फ़िलाड क्लासरूम जैसी महत्वपूर्ण शैक्षिक विधाओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया

गया। कार्यक्रम के पहले सप्ताह के समन्वयक डॉ. रंजीत सिंह व दूसरे सप्ताह की समन्वयक के रूप में डॉ. अंजना थी। इस कार्यक्रम में संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अंजली पोतनीस और डॉ. बशीर उल्लाह शेख ने भी अपना योगदान दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को तकनीकी शिक्षा के वर्तमान परिवेश में आवश्यक कौशल प्रदान करना था, ताकि वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत अपेक्षित परिणामों को प्राप्त कर सकें और आधुनिक शैक्षिक विधाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों को आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोण, आईसीटी उपकरणों का उपयोग, और परिणाम-आधारित शिक्षा के महत्व से परिचित कराने में सफल रहा।

जीवन की गुणवत्ता सुधारने हेतु आत्म-प्रबंधन पर कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 25 से 29 नवंबर 2024 तक ‘जीवन की गुणवत्ता सुधारने हेतु आत्म-प्रबंधन’ विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के लिए आत्म-प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान करना था। विशेष रूप से, यह कार्यक्रम कार्यस्थल पर व्यक्तिगत प्रदर्शन में सुधार, नवाचार और रचनात्मक सोच को बढ़ावा देने, कार्य प्रदर्शन के तरीके सुधारने, संचार कौशल और प्रस्तुति क्षमता में वृद्धि जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित था। इसके माध्यम से प्रतिभागियों

को आत्म-प्रबंधन की तकनीकों और प्रभावी कार्यस्थल के विकास के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करने का लक्ष्य था। प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण से न केवल अपने व्यक्तिगत कौशल में सुधार किया, बल्कि यह भी सीखा कि कैसे कार्यस्थल पर अधिक प्रभावी और उत्पादक तरीके से काम किया जा सकता है। इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को आत्म-प्रबंधन के महत्व को समझने और उसे अपनी कार्यशैली में शामिल करने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सकारात्मक बदलाव आए। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. मनीष भार्गव व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सचिन तिवारी ने योगदान दिया।

सूक्ष्म एवं लघु ग्रामीण इनक्यूबेशन पर कार्यक्रम

संस्थान के तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 14 से 18 अक्टूबर 2024 तक "सूक्ष्म एवं लघु ग्रामीण इनक्यूबेशन" विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सूक्ष्म और लघु उद्यमों को सशक्त बनाकर इनक्यूबेशन केंद्र स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहित करते हैं, उत्पादकता को बढ़ाते हैं और सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से ग्रामीण समुदायों में समृद्धि लाते हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, विभाग द्वारा "सूक्ष्म एवं लघु ग्रामीण इनक्यूबेशन" विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सूक्ष्म और लघु उद्यमों को सशक्त बनाकर इनक्यूबेशन केंद्र स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहित करते हैं, उत्पादकता को बढ़ाते हैं और सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से ग्रामीण समुदायों में समृद्धि लाते हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, विभाग द्वारा "सूक्ष्म एवं लघु ग्रामीण इनक्यूबेशन" विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था प्रतिभागियों को सूक्ष्म और लघु ग्रामीण उद्यमों के इनक्यूबेशन मॉडल से अवगत कराना, ताकि वे इन केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और उत्पादकता वृद्धि में अपनी भूमिका निभा सकें। यह कार्यक्रम ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था,



जिससे प्रतिभागियों को नए दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. मनीष भार्गव व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सचिन तिवारी ने योगदान दिया।

पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग

परिणाम आधारित पाठ्यक्रम कार्यान्वयन और मैनुअल विकास पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 25 से 29 नवंबर 2024 राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड, पटना में "परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन (प्रश्न पत्र और प्रयोगशाला मैनुअल विकास)" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड, पटना के विभिन्न संस्थानों से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य

पर प्रशिक्षण प्रदान करना था, ताकि शैक्षिक संस्थान अपने पाठ्यक्रम को उच्च गुणवत्ता और व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकें। प्रश्न पत्र और प्रयोगशाला मैनुअल के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया, ताकि शिक्षक पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थी परिणामों की प्रभावी मूल्यांकन प्रक्रिया को लागू कर सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. हुसैन जीवाखान ने योगदान दिया।

पाठ्यक्रम संरचना का विकास पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 20 दिसंबर 2024 को महाराष्ट्र राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड (एमएसबीटीई), पुणे में “पाठ्यक्रम संरचना का विकास” विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड के विभिन्न संस्थानों से 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क 2023 के अनुरूप मल्टी-एंट्री और मल्टी-

एग्जिट संरचना को विकसित करना था, ताकि एमएसबीटीई के 49 डिप्लोमा कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम संरचना को पुनः डिज़ाइन किया जा सके। कार्यशाला में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क 2023 के दिशा-निर्देशों के अंतर्गत डिप्लोमा कार्यक्रमों की संरचना को अधिक लचीला और विद्यार्थियों की भविष्य की जरूरतों के अनुसार अनुकूल बनाने पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे।

परिणाम आधारित पाठ्यचर्चाया विकास पर कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 16 से 20 दिसंबर 2024 तक “परिणाम आधारित पाठ्यचर्चाया विकास” विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत पाठ्यचर्चाया को पुनः डिज़ाइन करने के पहले चरण में विश्लेषण से लेकर पाठ्यक्रम विकास तक के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना था। कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों और दिशानिर्देशों के आधार पर पाठ्यचर्चाया को विकसित करने की प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की गई। इसमें प्रतिभागियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तत्वों को अपने-अपने

प्रोग्राम्स में लागू करने, पाठ्यक्रम की संरचना में सुधार करने, कोर्स आउटकम्स को पुनः लिखने और पाठ्यक्रम के समाधान आधारित दृष्टिकोण को अपनाने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. हुसैन जीवाखान ने योगदान दिया।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग पर कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 16 से 20 दिसंबर 2024 तक “कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एवं मशीन लर्निंग (एमएल)” विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह कार्यशाला एआई और एमएल में व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित थी, जिसमें पायथन प्रोग्रामिंग का उपयोग करके पर्यावेक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षण सहित विभिन्न मशीन लर्निंग एल्गोरिदम पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। पायथन प्रोग्रामिंग का व्यापक रूप से उपयोग करते हुए, प्रतिभागियों ने मशीन लर्निंग मॉडल्स को प्रशिक्षित करने, मूल्यांकन करने और डेटा प्रोसेसिंग के विभिन्न पहलुओं पर काम किया। प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के डेटा सेट दिए गए, जिनका उपयोग करके उन्होंने डेटा क्लीनिंग, डेटा एनालिसिस और मॉडल निर्माण की प्रक्रिया को सीखा और अभ्यास किया। इस प्रक्रिया

में उन्हें यह भी समझने का अवसर मिला कि कैसे वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग किया जा सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, उन्होंने वास्तविक जीवन के डेटासेट पर काम किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रूपेश कुमार देवांग व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. एस. गणपति ने योगदान दिया।



विस्तार केंद्र गोवा में आयोजित कार्यक्रम प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग पर ऑनलाइन कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 07 से 09 अक्टूबर 2024 तक “प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग” विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एक सक्रिय और आकर्षक ऑनलाइन शिक्षण वातावरण बनाना था, जो समस्या समाधान, आलोचनात्मक सोच और सहयोग को प्रोत्साहित करता है, और इसे परियोजना आधारित शिक्षा (PBL) के माध्यम से लागू किया गया। प्रतिभागियों ने अपने क्षेत्र से संबंधित वास्तविक दुनिया

की चुनौतियों के साथ काम किया, जिन्हें प्रशिक्षकों ने मार्गदर्शन किया और PBL के इंजीनियरिंग शिक्षा में महत्व को उजागर किया, साथ ही प्रासंगिक समस्या परिदृश्यों को बनाने में मदद की। इस प्रशिक्षण में शोध और प्रस्तुतियों के लिए डिजिटल उपकरणों का परिचय भी दिया गया, जिससे आभासी सेटिंग्स में प्रभावी टीमवर्क को बढ़ावा मिला। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. बी.एल गुप्ता ने योगदान दिया।

इलेक्ट्रिक एवं हाइब्रिड वाहनों में नवीनतम उन्नति पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 21 से 25 अक्टूबर 2024 तक “इलेक्ट्रिक एवं हाइब्रिड वाहनों में नवीनतम उन्नति” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों के क्षेत्र में हो रही नवीनतम प्रगति और विकास पर ध्यान केंद्रित करना था। इसमें इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों की प्रौद्योगिकी, उनके संचालन, और संबंधित चुनौतियों का विश्लेषण किया गया। कार्यक्रम में स्मार्ट हाइब्रिड वाहनों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान किया गया। इसमें दोहरी बैटरी सेटअप और इंटीग्रेटेड स्टार्टर जनरेटर के उपयोग को प्रमुखता से समझाया गया, जो इन वाहनों की ईंधन दक्षता को बढ़ाने और उत्सर्जन को कम करने में

मदद करता है। स्मार्ट हाइब्रिड वाहनों के प्रदर्शन को भी इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उल्लेखित किया गया। इन वाहनों में पूर्ण हाइब्रिड तकनीक, इलेक्ट्रिक मोटर का उपयोग, स्वचालित गियर शिफ्टिंग (AGS), स्वायत्त आपातकालीन ब्रेकिंग, और स्मार्टवॉच कनेक्टिविटी जैसी महत्वपूर्ण विशेषताएँ शामिल हैं, जो न केवल ड्राइविंग अनुभव को सुरक्षित और आरामदायक बनाती हैं, बल्कि ईंधन की खपत और उत्सर्जन को भी नियंत्रित करती हैं। इस कार्यक्रम में व्यावहारिक प्रदर्शनों द्वारा प्रतिभागियों को इलेक्ट्रिक मोटर, एसी कंप्रेसर, बैटरी, चार्जिंग सिस्टम, और ब्रेकिंग सिस्टम के कार्यों की भी विस्तृत जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।



गुणात्मक मूल्यांकन – रूब्रिक्स पर ऑनलाइन कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 04 से 08 नवम्बर 2024 तक “गुणात्मक मूल्यांकन - रूब्रिक्स” विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा की दिशा में होने वाले परिवर्तनों और रूब्रिक-आधारित मूल्यांकन पद्धतियों को समझने और लागू करने में संकाय को सक्षम बनाना था। इस कार्यक्रम में, प्रतिभागियों को गुणात्मक मूल्यांकन और रूब्रिक्स के माध्यम से

शिक्षा में गुणवत्ता सुधारने के तरीकों से परिचित कराया गया। रूब्रिक्स एक मूल्यांकन उपकरण है, जिसका उपयोग विभिन्न कार्यों और परियोजनाओं के मूल्यांकन में किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों के कार्यों के प्रदर्शन के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट रूप से परखा जा सकता है। संस्थानों में रूब्रिक्स को एकीकृत करने के लिए आवश्यक कदमों पर चर्चा की गई, जिससे संस्थान के मूल्यांकन प्रणाली में सुधार लाया जा सके। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. बी.एल गुप्ता ने योगदान दिया।

वर्चुअल प्रयोगशाला पर ऑनलाइन कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 19 से 21 नवम्बर 2024 तक “वर्चुअल प्रयोगशाला” विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 43 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को वर्चुअल प्रयोगशालाओं के सिद्धांत, उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग, और शिक्षा, अनुसंधान तथा उद्योग में उनके लाभ के बारे में गहन समझ प्रदान करना था। इस ऑनलाइन कार्यक्रम ने वर्चुअल प्रयोगशाला की मूल अवधारणाओं को समझने के साथ-साथ, इसे शिक्षा, अनुसंधान और उद्योग के क्षेत्रों में प्रभावी रूप से लागू करने के लिए आवश्यक कौशल भी प्रदान किया। वर्चुअल प्रयोगशालाएं

प्रयोगात्मक अनुभव को डिजिटल माध्यम से प्रस्तुत करती हैं, जिससे प्रतिभागियों को वास्तविक प्रयोगशाला वातावरण का अनुभव बिना किसी भौतिक स्थान पर मौजूद हुए प्राप्त हो सकता है। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को वर्चुअल लैब प्लेटफॉर्म पर नेविगेट करने, विभिन्न प्रयोगों को संचालित करने और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में इन उपकरणों का उपयोग करने की क्षमता दी गई। प्रतिभागियों ने सिमुलेशन टूल्स और प्रयोगात्मक सॉफ्टवेयर का उपयोग कर डिजिटल माध्यम से वास्तविक विज्ञान और इंजीनियरिंग प्रयोगों का अनुभव प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. हुसैन जीवाखान ने योगदान दिया।

प्रयोगशाला एवं कार्यशाला आधारित निर्देश और शिक्षण पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 09 से 13 दिसंबर 2024 तक “प्रयोगशाला एवं कार्यशाला आधारित निर्देश और शिक्षण” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया, जिसमें 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से 18 गोवा से और 12 अन्य राज्यों से ऑनलाइन शामिल हुए थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा में प्रयोगशाला और कार्यशाला आधारित शिक्षण पद्धतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षकों को आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करना था। प्रशिक्षण के दौरान, प्रतिभागियों को प्रयोगशाला और कार्यशाला आधारित शिक्षण विधियों के महत्व और प्रभावी उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम के समापन पर तकनीकी शिक्षा निदेशालय, गोवा के निदेशक, डॉ. विवेक कामत ने संबोधित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से मिली



प्रतिक्रिया को संग्रहा और बताया कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम भविष्य में सीएस (कंटीन्यूअस असेसमेंट सिस्टम) का हिस्सा बनेंगे। इसके तहत प्रत्येक प्रतिभागी को साल में तीन कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिलेगा, जिनमें से एक प्रत्येक सेमेस्टर में और एक छुट्टियों के दौरान होगा। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।

विस्तार केंद्र पुणे में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

सतत विकास हेतु हरित प्रौद्योगिकियों का महत्व पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र पुणे द्वारा दिनांक 02 से 06 दिसंबर 2024 तक “सतत विकास हेतु हरित प्रौद्योगिकियों का महत्व” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और हरित प्रौद्योगिकियों के प्रभावी उपयोग के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करना था। कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों और उसके प्रभावों पर चर्चा की गई। प्रशिक्षण में यह बताया गया कि विभिन्न

उद्योगों, जैसे भवन निर्माण, बिजली, विनिर्माण और परिवहन क्षेत्रों में हरित प्रौद्योगिकियों के उपयोग के क्या अनुप्रयोग हैं और इनका व्यवहारिक कार्यान्वयन किस प्रकार किया जा सकता है। प्रशिक्षकों ने बताया कि यह कैसे संसाधनों के पुनः उपयोग और पुनःचक्रण के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों की खपत को कम कर सकता है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. वी.डी.पाटिल व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. ए.के.जैन ने योगदान दिया।



परियोजना आधारित शिक्षा पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र पुणे द्वारा दिनांक 09 से 12 दिसंबर 2024 तक “परियोजना आधारित शिक्षा” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम परियोजना आधारित शिक्षा (PBL) के सिद्धांतों, इसके कार्यान्वयन और मूल्यांकन के बारे में प्रतिभागियों को गहरी जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। प्रशिक्षकों को परियोजना आधारित शिक्षण, एनईपी 2020 की मुख्य विशेषताएं, परिणाम

आधारित शिक्षा, अवधारणा, आवश्यकता, महत्व, प्रकार और परियोजना आधारित शिक्षण पद्धति से सीखना, परियोजना आधारित शिक्षण का मूल्यांकन, परियोजना आधारित शिक्षण की अन्य समूह आधारित शिक्षण विधियों से तुलना, परियोजना आधारित शिक्षण के विभिन्न प्रकारों, जैसे व्यक्तिगत परियोजनाएँ, समूह परियोजनाएँ, और समुदाय आधारित परियोजनाएँ पर विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आर.के.दीक्षित व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रोली प्रधान व डॉ.एस.एस.केदार ने योगदान दिया।



राजभाषा प्रकोष्ठ

तकनीकी हिंदी संगोष्ठी में संस्थान की सहभागिता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर द्वारा संयुक्त तकनीकी हिंदी संगोष्ठी का आयोजन जोधपुर में किया गया। इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य तकनीकी नवाचारों और विज्ञान संबंधी विचार-विमर्श को हिंदी भाषा में सरल और रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करना था, ताकि विद्यार्थी और शोधार्थी तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के उपयोग को बेहतर समझ सकें और इसे अधिक प्रभावी बना सकें। उक्त संगोष्ठी हेतु आलेख आमंत्रित किए थे, जिसके संदर्भ में संस्थान से दो महत्वपूर्ण आलेख प्रस्तुतीकरण हेतु चयनित किए गए। प्रथम चयनित आलेख प्रो. पी.के. पुरोहित, प्राध्यापक एवं अधिष्ठाता, समन्वयक (राजभाषा प्रकोष्ठ) का था जिसका शीर्षक "अंटार्कटिका: विज्ञान एवं चुनौतियाँ" था। इस आलेख में अंटार्कटिका के विज्ञान और वहां की चुनौतियों का विस्तार से विवेचन किया गया। द्वितीय चयनित आलेख श्रीमती बबली चतुर्वेदी, हिंदी अनुवादक का था, जिसका शीर्षक 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए भारतीय भाषाओं में शिक्षण संबंधित चुनौतियाँ एवं समाधान' था। इस आलेख में भारतीय भाषाओं में

शिक्षा के समक्ष आने वाली समस्याओं और उनके समाधान पर विचार किया।

02 दिसंबर 2024 को तकनीकी हिंदी संगोष्ठी में राजभाषा समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित और श्रीमती बबली चतुर्वेदी, हिंदी अनुवादक, ने कार्यक्रम में सहभागिता की और अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रीमती बबली चतुर्वेदी को उनके आलेख पर उत्कृष्ट प्रस्तुतिकरण हेतु प्रोत्साहन-प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी सन्दर्भ में 03 दिसंबर 2024 को आईआईटी जोधपुर और आईआईटी इंदौर द्वारा आयोजित राजभाषा कार्यशाला में श्रीमती बबली चतुर्वेदी ने भाग लिया। इस कार्यशाला में राजभाषा हिंदी के प्रभावी उपयोग और उसके विस्तार के तरीकों पर विचार-विमर्श किया गया, जिससे संस्थान और प्रतिभागियों को हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा मिली। यह आयोजन न केवल हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक रहा, बल्कि तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते उपयोग की दिशा से भी महत्वपूर्ण रहा।





श्रीमती वंदना त्रिपाठी

देश की मिट्टी

देश की मिट्टी है अनमोल,
नहीं है इसका कोई मोल,
मरने को रहते जवान हर पल,
करेंगे मां झंडा ऊंचा,
कभी ना होगा तेरा सिर नीचा,
शहीदों ने तुमको खून से सींचा,
हरा रहे सदा यह तेरा बगीचा,
शान तिरंगे की निराली,
छटा तेरी बहुत निराली,
खून की हर बूँद तुझपर अर्पण,
करते हम तन मन समर्पण,
हंसते हंसते मर जायेंगे,
तुझे सुरक्षित कर जायेंगे,
हैं नमन उन वीरों को,
दिया सर्वस्व देश हित पर,
हंसते गाते हुए शहीद,
धन्य हैं भारत के वीर,
जग के वे सच्चे हीरे हैं,
हुऐ अमर भारती के लाल ,
महिमा उनकी बड़ी विशाल,
वंदेमातरम् वंदेमातरम्,
जय हिन्द, जय हिन्द,
जय भारत जय जय भारत।

पैसे के पीछे भागते लोग

पैसे के पीछे भागते लोग,
बड़े परेशां चलते हैं लोग,
लगा इन्हें माया का रोग,
भागते दौड़ते रेस है रोज,
सुख साधनों का उपयोग,
किंतु कर्म के फल भोग,
सुख दुख करेंगे रोज रोज,
नई आशा दिखे हर रोज,
हाथ फैला कैच करते हैं,
झोली अपनी भरते हैं,
बस चलते ही रहे हैं,
हाथ बढ़ाये रहे हैं,
सुनें इनके बड़े बड़े हैं,
हाथ उठाकर सभी खड़े हैं,
जिद पर अपनी अड़े हैं,
सपने बहुत बड़े बड़े हैं,
रात दिन बस दौड़ है,
नहीं सुझे कुछ और है।

नये भारत की प्रगति किस ओर!

भारत की प्रगति: चुनौतियाँ और समाधान

..श्री अजय जाटव



भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, और पिछले कुछ वर्षों में नये विकासात्मक आयाम स्थापित कर चुका है। कई क्षेत्रों में भारत का नाम विश्व कीर्तिमान के रूप में दर्ज हुआ है, जैसे- भारत में स्थित विश्व की सबसे बड़ी मूर्ति, दुनिया का सबसे बड़ा स्टेडियम, भारत की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, विश्व का सबसे ऊँचा पुल, भारत में स्थित सबसे बड़ा फ्लोटिंग सोलर पावर प्लांट, और क्र्यशक्ति के आधार पर भारत की दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था। चाहे जनसंख्या वृद्धि हो या विश्व रिकॉर्ड, हम निरंतर प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन क्या यह सभी प्रगति भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए पर्याप्त है? हम देखते हैं कि कुछ देशों, जैसे अमेरिका, के राष्ट्रपति शपथ ग्रहण करते समय "मेक अमेरिका ग्रेट अगेन" जैसे वाक्य का उपयोग करते हैं। वहीं, भारत में जब सांसद शपथ लेते हैं, तो वे अपने-अपने क्षेत्रीयता को प्राथमिकता देते हैं, न कि देश को सर्वोपरि मानते हुए शपथ लेते हैं।

भारत को विश्व में एकता, विरासत, शांति प्रियता, कदृता करने वाला (सर्वधर्म समभाव), देवो भवः) और सम्पूर्ण विश्व को कुटुम्बकम्) देश के रूप में पहचान परिप्रेक्ष्य में आज समाज में राजनीतिक उठापटक जैसी लोभ-स्वार्थ में इस हद तक ढूबे हुए नहीं रह गया। वे किसी की भी जान अजनबी पर तो विश्वास करना दूर करना मुश्किल हो गया है। कहीं नाम पर लड़ाई हो रही है। चारों ओर चुका है। जबकि यदि हम किसी भी कि उनके मूल सिद्धांतों में मानवता है। भारत उन देशों में अग्रणी है जहाँ और उन्हें भारत में वह सभी के व्यक्तियों—हिन्दू, सिख, बौद्ध, अधिकारों का पूरी तरह से उपयोग को अधिकार नहीं है, तो वह आतंकवाद फैलाने, दंगे करने, सुरक्षा बलों पर पत्थर फेंकने, बम विस्फोट कर निर्दोषों की जान लेने, कदृ धार्मिक गतिविधियों में लिप्त होने और उन्माद फैलाने का अधिकार नहीं है। यह सभी गतिविधियाँ हमारे समाज के लिए हानिकारक हैं, क्योंकि ये हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और एकता की विरासत को नष्ट करती हैं। यदि यह जारी रहा, तो यह हमारे देश को फिर से गुलाम बना सकती है और हमारी मानसिकता को गिरा सकती है।



सांस्कृतिक विविधता, समृद्ध रहित देश, सभी धर्मों का सम्मान अतिथि सत्कार करने वाला (अतिथि एक परिवार मानने वाला (वसुधैव प्राप्त है। लेकिन बदलते राजनीतिक आतंकवाद, धार्मिक द्रेष, कदृता, समस्याएँ बढ़ रही हैं, और कुछ लोग हैं कि उन्हें इंसानियत से कोई मतलब लेने पर उतारू हो जाते हैं। अब की बात है, अपनों पर भी भरोसा हिन्दू-मुस्लिम, तो कहीं जातिवाद के भय और अशांति का माहौल बन धर्म के धर्मग्रंथों को देखें, तो पाएंगे और नैतिकता को सर्वोपरि माना गया सबसे अधिक मुस्लिम आबादी है, अधिकार प्राप्त हैं, जो अन्य समुदायों ईसाई आदि—को प्राप्त हैं, और वे इन करते हैं। भारत में यदि किसी व्यक्ति

वहीं दूसरी ओर, नए भारत के समाज में बुजुर्गों और उम्रदार व्यक्तियों का सम्मान घटता जा रहा है। आगे बढ़ने की चाह में लोग बुजुर्गों और उनकी शिक्षाओं को भूलते जा रहे हैं। शहरों में बृद्धाश्रमों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। संयुक्त परिवारों की जगह अब एकल परिवारों का चलन बढ़ रहा है। लालच में रिश्तों और मर्यादा की अहमियत खत्म होती जा रही है, और एकाकीपन बढ़ रहा है। आजकल ज्यादातर युवा अपनी सीटें बसों और ट्रेनों में बुजुर्गों और महिलाओं को नहीं देते। हालाँकि, वे उन्हें सम्मान नहीं दे रहे, लेकिन अपने रिश्तेदारों के बीच भी लालच की वजह से दरारें पैदा हो रही हैं। अब रिश्तेदार ही संपत्ति और पैसे के लिए एक दूसरे को धोखा देने और मारने पर उतारू हो जाते हैं। हम समाचारों में अनगिनत बार महिलाओं के खिलाफ जघन्य अपराधों की खबरें पढ़ते हैं, और लोग कुछ समय के लिए मोमबत्तियाँ जलाकर उनकी याद में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, लेकिन कुछ समय बाद सभी इन घटनाओं को भूल जाते हैं।

इसका दोष किसे दिया जाए? हम तो उन्नति कर रहे हैं, विकसित देश बन रहे हैं, फिर ये लोग कौन हैं जिनकी वजह से हमारा समाज प्रदूषित हो रहा है? क्या हमारे संस्कार दोषपूर्ण हैं? नहीं, हम तो बच्चों की परवरिश अच्छे से कर रहे हैं। उन्हें नए गेजेट्स या लाखों रुपये वाली फीस वाले अच्छे स्कूलों में भेजकर हम उन्हें शिक्षित कर रहे हैं। फिर दिक्कत कहाँ है? यह समस्या है, और इसे दूर करना होगा। सवाल यह है कि यह जिम्मेदारी किसकी है—सरकार की या समाज की? यदि सरकार इसे हल करेगी, तो हम क्या करेंगे? समाज में बड़े पदों पर पहुँचकर हम क्या योगदान देंगे? क्या हमने समाज सुधारने की जिम्मेदारी खुद ले ली है? नहीं, यह हमारा भारत है और इसके प्रति हमारा भी कर्तव्य है। यह कौन लोग हैं? ये वे लोग हैं जो अभावों में भटक गए हैं, जिन्होंने लालच में अपना रास्ता बदल लिया है और जिनका माइंड वॉश कर दिया गया है—कुछ लोगों ने एक सुनियोजित रणनीति के तहत उन्हें बरगलाया है। ये वे लोग हैं जो जीवित तो हैं, लेकिन उनके दिलों और दिमागों में द्रेष और कटूरता घुसा दी गई है। कुछ आकाओं ने उनके दिमाग में उलझन और नफरत भर दी है, ताकि ये लोग हमेशा उनके इशारों पर नाचें और उनका स्वार्थ सिद्ध करते रहें। इस प्रक्रिया में टी.वी., इंटरनेट और मीडिया भी जिम्मेदार हैं, क्योंकि वे नये भारत को सही दिशा देने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। हमें उन लोगों के संघर्षों और प्रेरणाओं को दिखाना चाहिए जिन्होंने मानवता और सांस्कृतिक एकता के लिए मिसाल कायम की है। हमें उनकी कहानियाँ सामने लानी चाहिए, जो भारत रत्न या पद्म पुरस्कार प्राप्त करते हैं। हम उन्हें सम्मान कर्यों दे रहे हैं?

नहीं, ऐसा नहीं होगा। हमें आगे आना होगा—शिक्षकों को, बुद्धिजीवियों को, और शासन-प्रशासन में बैठे उन व्यक्तियों को, जो समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं। बिना किसी स्वार्थ के, धर्मगुरुओं, मौलवियों, पंडितों, और पादरियों को समाज को सही दिशा दिखानी होगी, और जो लोग गलत राह पर जा रहे हैं, उन्हें समझाना होगा। क्योंकि समाज के लोग इनकी बातों को मानते हैं, इनके उपदेशों पर चलते हैं। बच्चों को माता-पिता और परिवार द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए, जिसमें मानवता सर्वोपरि हो, नैतिकता का समावेश हो। उन्हें यह सिखाना चाहिए कि बुजुर्गों और बड़े व्यक्तियों का सम्मान करें। उन्हें यह भी सिखाना चाहिए कि महिलाओं का सम्मान करना कितना महत्वपूर्ण है। उनके मन में राष्ट्रीयता, सभी धर्मों का सम्मान, आपसी प्रेम और अपने कर्तव्यों का पालन करने की भावना बोनी चाहिए।

2025 का नया वर्ष शुरू हो रहा है, और यदि हम चाहते हैं कि हमारा भारत महान बने, और सभी भाई-चारे के साथ रहे, तो हमें इसे महान बनाने में योगदान देना होगा। यह कार्य सभी शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों के माध्यम से करना होगा। हमें ऐसे उदाहरण पेश करने होंगे जो समाज के हित में हों। यही हमारा सबसे बड़ा योगदान होगा। नहीं तो आने वाले वर्षों में हम अपनी नई पीढ़ियों की बर्बादी का मंजर अपनी आँखों से देखेंगे। अगर बांग्लादेश, सीरिया, यूक्रेन आदि के लोग उपरोक्त बातें समझकर उन्हें अपनाते, तो शायद इन देशों में इस तरह के वर्ग संघर्षों की स्थिति नहीं बनती।

हमारे देश के संदर्भ में हमें महात्मा गांधी की इस महत्वपूर्ण बात को याद रखना चाहिए: "मैं अपने घर को चारों ओर से दीवारों से घेरना नहीं चाहता और न ही खिड़कियों को बंद रखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सभी देशों की संस्कृतियाँ मेरे घर के चारों ओर निर्बाध रूप से प्रवाहित हो सकें। हालांकि, मैं यह कभी नहीं चाहूँगा कि उनकी तेज़ हवा मेरे पाँवों को उखाड़ दे।" हमें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की जिम्मेदारी भी उठानी होगी।

बड़े उद्घाटन नया भारत

मध्य प्रदेश – फिल्म निर्माताओं की पहली पसंद

लाइट्स, कैमरा..... मध्य प्रदेश!

--श्रीमती बबली चतुर्वेदी



भारत के हृदय स्थल, मध्य प्रदेश की स्थापना 1 नवंबर 1956 को हुई थी, और 01 नवंबर 2024 को राज्य ने अपना 69वां स्थापना दिवस मनाया। मध्य प्रदेश, न केवल अपनी ऐतिहासिक धरोहर और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि अब यह फिल्म निर्माताओं के लिए एक प्रमुख शूटिंग स्थल बन चुका है। राज्य की समृद्ध संस्कृति, अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक स्मारक और विविध भौगोलिक परिदृश्य ने इसे फिल्मों और वेब सीरीज की शूटिंग के लिए एक आकर्षक स्थल बना दिया है। मध्य प्रदेश के विभिन्न पर्यटन स्थल, जैसे महेश्वर, ओंकारेश्वर, भेड़ाघाट, भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, मांडू और ओरछा और पचमढ़ी, आज फिल्म निर्माताओं के पसंदीदा शूटिंग स्थलों में शामिल हो गए हैं। राज्य की लुभावनी दृश्यावलियाँ और विविध स्थान, जैसे प्राचीन किलों और मंदिरों से लेकर घने जंगलों और झारनों तक, फिल्म निर्देशकों को यहां की अपूर्व प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व में बेहतरीन शूटिंग स्थलों का खजाना प्रदान करती हैं।

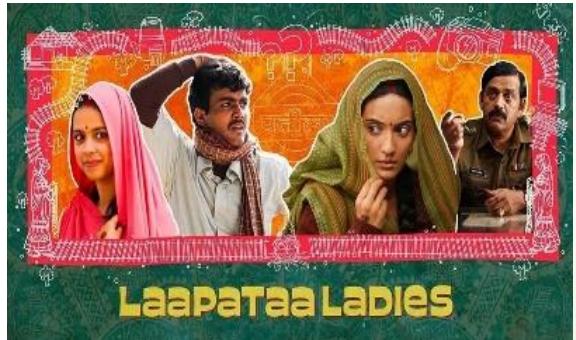


मध्य प्रदेश की भौगोलिक विविधता, जिसमें 77,700 वर्ग किलोमीटर का वन क्षेत्र, 11 राष्ट्रीय उद्यान और 24 वन्यजीव अभयारण्यों का समावेश है, इसे एक आदर्श शूटिंग स्थल बनाता है। यहां के प्रसिद्ध स्थलों जैसे सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, चंबल घड़ियाल अभयारण्य, कान्हा और बांधवगढ़ के जंगल, खजुराहो और सांची के प्राचीन मंदिर और किलों, और ग्वालियर, महेश्वर, मांडू और ओरछा के ऐतिहासिक स्मारकों ने इसे शूटिंग के लिए आदर्श स्थान बना दिया है। इसके अतिरिक्त, मध्य प्रदेश की गंगा-जमुनी तहजीब, स्थानीय संस्कृति, और जनजातीय संग्रहालयों में प्रदर्शित अद्वितीय लोक कला ने इसे और भी आकर्षक बना दिया है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, फिल्म निर्माता यहां शूटिंग करना पसंद करते हैं, क्योंकि यह उन्हें फिल्मों में विविधता और असली भारतीय जीवन का अनूठा चित्रण प्रस्तुत करने का अवसर देता है।

मध्य प्रदेश का सौंदर्य एवं संस्कृति के साथ-साथ अतिथि देवो भव की परंपरा ने देश ही नहीं बल्कि विश्वभर के फिल्म निर्माताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। आज यदि ये कहा जाये कि मध्य प्रदेश फिल्म निर्माताओं की पहली पसंद बनता



जा रहा है तो इस बात में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हाल के वर्षों में मध्य प्रदेश ने न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों, ओटीटी (ओवर द टॉप) श्रृंखलाओं और टेलीविजन शो में भी अपनी पहचान बनाई है। कई प्रमुख फिल्मों और टीवी परियोजनाओं की शूटिंग मध्य प्रदेश में की गई है, जिनमें "लापता लेडीज", "पंचायत", "द रेलवे मेन", "आश्रम", "गुल्लक", "पटना शुक्ला", "गुटर-गु", "राजनीती", "आरक्षण", "मणिकर्णिका", "लुका छुपी" जैसी चर्चित फिल्में और शो शामिल हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से राज्य की आकर्षक स्थल और सुंदरता को व्यापक रूप से दर्शाया गया है। मध्य प्रदेश को फिल्म शूटिंग के लिए एक प्रमुख स्थल के रूप में उभरने के लिए हाल ही में 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में 'देश में सबसे अधिक फिल्म अनुकूल राज्य' के रूप में सम्मानित किया गया था। यह मान्यता राज्य की फिल्म निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता और विभिन्न अनुकूल परिस्थितियों की ओर इशारा करती है।



मध्य प्रदेश ने न केवल अपनी भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता को फिल्म निर्माताओं के सामने रखा, बल्कि यह राज्य के स्थानीय कलाकारों के लिए भी एक बड़ा मंच बन गया है। पहले मध्य प्रदेश के कलाकार केवल कुछ दूरदर्शन शोज तक ही सीमित थे, लेकिन अब बड़ी संख्या में स्थानीय



कलाकार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर फिल्म और टेलीविजन परियोजनाओं का हिस्सा बन चुके हैं। इसने न केवल उनके लिए रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं, बल्कि फिल्म उद्योग में अपनी पहचान बनाने का एक शानदार अवसर भी दिया है।

मध्य प्रदेश सरकार ने फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई सकारात्मक कदम उठाए हैं। मध्य प्रदेश फिल्म पर्यटन नीति-2020 के अंतर्गत, राज्य सरकार फिल्म और शो निर्माताओं को सिंगल विंडो ऑनलाइन सिस्टम के माध्यम से शूटिंग की अनुमति देती है और 2 करोड़ रुपये तक की सब्सिडी प्रदान करती है। इसके अलावा, शूटिंग परिषिक्षण प्रक्रिया को सरल और समयबद्ध बनाने के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल भी स्थापित किया गया है, जिससे शूटिंग के लिए सभी आवश्यक अनुमतियाँ शीघ्रता से प्रदान की जाती हैं।

मध्य प्रदेश, अपनी सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक धरोहर, और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण फिल्म निर्माताओं के लिए एक आदर्श स्थल बन चुका है। राज्य की फिल्म पर्यटन नीतियाँ, शूटिंग के लिए आसान अनुमतियाँ और किफायती लागत इसे एक प्रमुख फिल्म निर्माण केंद्र के रूप में स्थापित कर रही हैं। मध्य प्रदेश वाकई में उन सभी के लिए एक उपहार है जो फिल्मी लेंस के माध्यम से प्रकृति और संस्कृति की खूबसूरती को देखना चाहते हैं।



नोट

संस्थान के कर्मचारी एवं उनके परिवार सदस्य जो अपना लेखन कौशल दिखाने में रुचि रखते हैं, उनसे अनुरोध है कि वे अपने लेख, कविताएँ, लघु कथाएँ राजभाषा सेल

(rajbhashacell@nitttrbpl.ac.in) को मेल करें।

आपकी प्रस्तुत प्रविष्टियाँ तदनुसार प्रकाशित की जाएँगी।

-- स्मृति शेष --
डॉ. दीपक सिंह को विनप्र श्रद्धांजलि
दीपक का कुछ यूँ बुझा जाना...

-प्रो. पी.के पुरोहित



दिनांक 23 अक्टूबर को शाम लगभग 06 बजे एक अत्यंत दुखद खबर मिली कि हमारे दीपक सिंह नहीं रहे। यह सुनना दुखद और अविश्वसनीय था। उस समय माननीय निदेशक महोदय के साथ मैं पोर्टब्लेयर में था। कई फोन कॉल्स और अलग-अलग जगहों से यह अत्यंत पीड़ादायक समाचार मिला, जो अंततः सच था। दिल कुछ मानने को तैयार नहीं था की हमारा अपना दीपक उत्तराखण्ड में केदारनाथ यात्रा के समय शायद बुझ गया था। माननीय निदेशक महोदय के चेहरे पर यह विकट दुःख स्वतः प्रकट हो रहा था। उस वेदना को शब्दों में व्यक्त करना शायद कभी संभव नहीं हो सकता। हम सभी कई घंटों तक खुद को संभालने की कोशिश करते रहे, पांतु नियति के सामने हम सभी बेबस थे। पूरी रात, जो शायद जीवन की सबसे पीड़ादायक रात थी, आँखों में कटी। नींद का नामोनिशान भी नहीं था। रातभर डॉ. दीपक सिंह के साथ के 12 वर्षों की यादें स्मृति पटल पर अंकित हो गईं। पोर्टब्लेयर में राजभाषा सम्मेलन में संस्थान की पत्रिका 'संपर्क सरिता' के प्रकाशन के 25 वर्षों की उपलब्धि पर पुरस्कार मिलना था। डॉ. दीपक सिंह ने मुझे इस सम्मेलन में जाने के लिए विशेष आग्रह यह कहते हुए किया था कि यह एक विशेष अवसर है जब आपकी मेहनत का सम्मान मिलना है। अगले दिन हिंदी सम्मेलन में मेरा एक आमंत्रित व्याख्यान था, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी को करनी थी। अपनी प्रतिबद्धता और वचनबद्धता को पूरा करते हुए मैंने अपना व्याख्यान डॉ. दीपक सिंह को समर्पित किया।



पोर्टब्लेयर से निकलकर भोपाल एयरपोर्ट से रात 10 बजे सीधे डॉ. दीपक सिंह के निवास पर पहुंचा और उनके पार्थिव शरीर पर अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की। परिवार और बच्चों की वेदना और पीड़ा असहनीय थी। परिवार के सभी सदस्यों से मेरा परिचय और आत्मीयता रही है, और सभी निशब्द थे। उनका मौन चीख-चीख कर बहुत कुछ व्यक्त कर रहा था। ईश्वर के निर्णय के आगे हम सभी बेबस थे। बहुत देर तक बच्चों और उनके पूज्य पिताजी के हाथों को पकड़कर उन्हें सांत्वना देने का असफल प्रयास करता रहा। फिर रात लगभग 11 बजे वापस घर पहुंचा। यह रात भी बहुत पीड़ादायक थी। नींद का नामोनिशान नहीं था। अगले दिन सुबह डॉ. दीपक सिंह की अंतिम और अनंत यात्रा पर संस्थान परिवार के लगभग हर सदस्य का गमगीन होना स्वाभाविक था। सभी निशब्द थे।

डॉ. दीपक सिंह के साथ का 12 वर्षों का सफर बेहद प्रेरणादायक और यादगार रहा। विभाग और संस्थान में गणित के शिक्षक की हमेशा कमी महसूस हो रही थी, जिसे डॉ. सिंह ने आते ही पूरा किया। वह एक उत्कृष्ट शिक्षक, बेहतरीन शोधकर्ता, और प्रशासन में भी दक्ष थे। शायद सभी गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति। मेरा उनसे संबंध एक मित्र और पारिवारिक भी था। किसी भी निर्णय पर हमेशा सही सलाह और उसका सही विश्लेषण मिलता था। संस्थान में आते ही सबसे पहले मेरे कक्ष में चाय, फिर साथ में लंच, और लंच पर बहुत सारी बातें होती थीं।

कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और यात्राओं में डॉ. सिंह के साथ रहा। वह अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित शिक्षक थे और विभाग के लिए एक महत्वपूर्ण सदस्य। उनका इस तरह जाना जीवनभर की पीड़ा दे गया। विज्ञान विभाग का हर कक्ष उनकी मेहनत का साक्षी है। हर जगह से उनकी यादें जुड़ी हुई हैं। आज भी विभाग की हर मीटिंग में उनके द्वारा कहे गए शब्दों को हम पुनः दोहराते हैं, जैसे कि इस समय डॉ. सिंह की प्रतिक्रिया शायद यह होती। विभाग में हम सभी, डॉ. हुसैन जीवाखान, डॉ. बशीर उल्ला शैक, और अन्य कर्मचारी, ऐसा कोई दिन नहीं होता जब हम उन्हें याद न करते हों। वह निडर, साहसी, और विपरीत परिस्थितियों में भी हौसला न खोने वाले व्यक्ति थे, और अपने काम के प्रति समर्पण उनकी विशेषता थी। जीवन को जीने का उनका एक अलग अंदाज था, जो उन्हें हमेशा जीवंत बनाए रखता था। शिक्षक और छात्रों को हमेशा प्रेरित करना उनकी जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा था। विभाग और संस्थान उनके उत्कृष्ट योगदान को शायद कभी नहीं भूल पाएंगे। डॉ. सिंह की यादें हम सभी के स्मृति पटल पर हमेशा अंकित रहेंगी।

हम सभी संस्थान की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।







